कोरोना महामारी के परिप्रेक्ष्य में माध्यमिक स्तर पर ऑनलाइन शिक्षण पद्धति का विश्लेषण

डॉ० राखी वा०

असिस्टेन्ट प्रोफेसर समाजशास्त्र रा०डि०का० काण्डा, बागेश्वर

प्रमुख शब्द- कोविड-19 वायरस, ऑफलाइन, ऑनलाइन, शिक्षण, महामारी।

शोध सारांश:- कोविड-19 का प्रकोप एक प्रमुख वैश्विक स्वास्थ्य चिन्ता का विषय बन गया और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने विश्व स्तर पर 545,226550 संक्रमित मामलों और इस वैश्विक महामारी में 6,314,728 लोगों की मौत की जानकारी उपलब्ध करायी है(WHO22) कोविड-19 विषाणु से होने वाले रोग एक संक्रामक बीमारी है, जो गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम कोरोना वायरस-2 (सार्स) कोरोना वायरस से होने वाली इस बीमारी को 31 जनवरी 2020 को सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल के रूप में सूचीबद्ध किया और इसे 11 मार्च, 2020 को एक महामारी के रूप में घोषित कर दिया।(Cucinotta&Vanelli,2022)कोविड-19 एक विश्वव्यापी महामारी के रूप में हमारे सामने आयी, जिसका प्रभाव सम्पूर्ण विश्व स्तर पर पड़ा। भारी जान-माल के नुकसान के साथ आर्थिक अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई। वहीं लोगों के सामने जीविका कमाने व स्वयं को सुरक्षित रखने के लिए बड़े सवाल खड़े कर दिये। कोरोना महामारी से केवल आर्थिक जगत ही अत्यधिक प्रभावित हुआ वरन् सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, उद्योग जगत सभी संस्थाएं इसके प्रभाव से अछूती नहीं रही है। साथ ही इस दौरान सामाजिक दूरियां बढ़ने व लोगों का दायरा घर तक सीमित रहने के कारण अनेक सामाजिक समस्याएं भी उत्पन्न हुई, जिसमें शैक्षिक संस्थाएं भी अत्यधिक प्रभावित हुई। कोविड के कारण स्कूलों के बन्द होने से बच्चे असामान्य रूप से प्रभावित हुए, क्योंकि महामारी के दौरान सुचारू रूप से पठन-पाठन जारी रखना एक चुनौती के रूप में सामने आया। सभी बच्चों के पास सीखने के लिए जरूरी अवसर, साधन या पहुँच नहीं थी। ग्रामीण क्षेत्रों की बात करें, तो सुविधाओं के ना होने से प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर अध्यापन कार्य बुरी तरह से प्रभावित हुआ।अतः प्रस्तुत शोध-पत्र माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं के समक्षकोविड-19 के दौरान ऑनलाइन शिक्षण में आने वाली समस्याओं का अध्ययन किया गया है। साथ ही अध्ययन में यह भी देखने का प्रयास किया गया है कोविड-19 में लागू शिक्षा पद्धति कहाँ तक विद्यार्थियों के सीखने सिखाने में कारगर सिद्ध हुई है।

प्रस्तावना किसी भी समाज व राष्ट्र का प्रतिबिम्ब सदैव ही वहां के विद्यार्थी होते है, क्योंकि वे ही भविष्य के कर्णधार व सूत्रधार होते हैं। इन विद्यार्थियों के अध्ययन के आधार पर अनुमान लगाया जा सकता है कि कल के भावी नागरिकों का आधार कैसा होगा? किन्तु विद्यार्थियों को सुयोग्य व सुनागरिक बनाने हेतु प्रथम अनिवार्य व आवश्यक शर्त है, अच्छी शिक्षा। शिक्षा प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार है और प्रत्येक बच्चे का अपने सम्पूर्ण विकास के लिए शिक्षित होना एक अनिवार्य आवश्यकता भी है, इसलिए व्यक्ति के मानसिक विकास के लिए शिक्षा को अति आवश्यक माना गया है। शिक्षा राष्ट्र निर्माण की आधार शिला है। साथ ही सभ्य समाज में सभ्यता व संस्कृति को गतिशील बनाने के लिए अनिवार्य अंग है। शिक्षा ही समाज में व्यक्तियों के नैतिक मूल्यों, सोचने-समझने व विचार करने की शक्ति प्रदान करती है। शिक्षा को व्यापक रूप से महत्वपूर्ण लोकहित और सामाजिक उत्तरदायित्व माना जाता है। समाज शिक्षा से विभिन्न रूपों से लाभान्वित होता है। "विद्या, बल और धन तीनों के लिए अलग-अलग स्थान हमारे समाज में दिये गये और सबसे ऊँचा स्थान विद्या और ज्ञान को ही मिला है या उसके बाद बल और धन को।"

अतः मनुष्य की मानसिक शक्ति के विकास के लिए शिक्षा अनिवार्य प्रक्रिया है तथा राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य व महत्वपूर्ण भी है। शिक्षा की सर्वप्रमुख एवं शक्तिशाली संस्था विद्यालय है, परन्तु कोरोना महामारी के आने के कारण हमारी स्कूली व्यवस्था बाधित हो गयी। लॉकडाउन के चलते सभी शिक्षण संस्थान को बन्द करना पड़ा। छात्र-छात्राओं को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था को तत्काल प्रभाव से बिना किसी प्रशिक्षण के लाया गया क्योंकि कोविड-19 जैसी वैश्विक स्तर की महामारी के दौरान संक्रमण से बच्चों को सुरक्षित रखते हुए शिक्षा के साथ जोड़ा जाये। इसी मुहिम में अगर एक भी बच्चा शिक्षा से वंचित रह जाता है, तो पढ़ाई का यह माध्यम अन्यायपूर्ण होगा क्योंकि "सच्चा विद्याभ्यास तो वही कहा जा सकता है, जिसमें जो कुछ सीखा गया है, उसके अतिरिक्त अधिक सीखने की और अधिक जानने की एक ऐसी चाह उत्पन्न हो जाए कि मनुष्य सारे जीवन भर अभ्यास क्रम को जारी रखे और अपने ज्ञान को अन्त तक बढ़ाता ही रहे"। विद्यार्थी जीवन मानव जीवन का शुभारंभ होता है, बालक-बालिका की शिक्षा में माध्यमिक स्तर की शिक्षा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि इस स्तर में बालक-बालिकाओं का शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास उनके भविष्य के लिए बहुत ही प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण होता है। इसी दृष्टि से प्रस्तुत शोधपत्र में माध्यमिक स्तर पर ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित किये जाने में आने वाली समस्याओं को देखने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य:-

1. ऑनलाइन शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों के सामने आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन करना।
2. ऑनलाइन शिक्षण के अन्तर्गत विद्यार्थियों के पास शिक्षण से सम्बन्धित साधनों की पहुँच को जानना।
3. ऑनलाइन शिक्षण में विद्यार्थियों के सीखने की स्थिति का आंकलन करना।

Dr. Madhulika Pathak
Principal
Government Degree College
Kanda (Bageshwar)